शीरीन: सख्त अकेडमीशियन लेकिन ज़िन्दादिल इन्सान

अजय दांडेकर

मुम्बई में जन्मीं शीरीन ने शायद बहुत छोटी उम्र में ही पुरातत्व विज्ञान के ज़रिए अतीत को समझने का फैसला कर लिया था। उनके कथन के अनुसार, कक्षा नौवीं में जब उन्होंने मोर्टिमर व्हीलर की किताब *आर्कियोलॉजी फ्रॉम द अर्थ* पढ़ी, तो उनके मन में कुछ ऐसा हुआ जिसने उन्हें पुरातत्व की पढ़ाई के लिए प्रेरित किया।

एक बार तय करने के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके इस फैसले से वास्तव में भारत के आद्य इतिहास (प्रोटो-हिस्ट्री) और सिन्धु घाटी सभ्यता के अध्ययन को बहुत फायदा हुआ।

मेरे खयाल से प्रारम्भिक काँस्य युग (ब्रोंज़ एज) के ज़रिए हड़प्पा के अध्ययन में प्रवेश करना और पीएचडी के लिए इस इलाके के व्यापार को चुनना, एक महत्वपूर्ण फैसला था। हड़प्पा अध्ययन की गहरी समझ उन्हें इस विषय के अन्य विद्वानों से अलग करती है। सिन्धु और मेसोपोटामिया

की संस्कृतियों के बीच शुरुआती व्यापारिक सम्पर्कों पर उनके लेखन से यह बात स्पष्ट होती है। उनकी पहली किताब *एंकाउंटर्स, द वेस्टर्ली ट्रेड ऑफ द हड़प्पा सिविलाइज़ेशन* (सन् 1981) और *हड़प्पन आर्कियोलॉजी* (सन् 2010) लगभग तीन दशक की विद्वतापूर्ण यात्रा है।

बेशक, हड़प्पा अध्ययन में प्रमुख शोधकर्ता के रूप में उनकी एक पहचान है, लेकिन इसके अलावा भी उन्होंने कई काम किए हैं। शीरीन ने गुजरात के छोटा उदयपुर इलाके में आदिवासी समुदाय के साथ पाँच साल रहते हुए गहन शोधकार्य किया।

ऐसे ही, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में स्कूली शिक्षकों को विविध प्रशिक्षणों में इतिहास पढ़ाया और हिन्दी में *भारतीय इतिहास के स्रोत* शीर्षक से एक किताब भी लिखी।• इस किताब को लिखने के लिए उन्होंने खुद हिन्दी में लिखना सीखा। इस किताब के कई अंश आज भी बहुत-से शिक्षक-प्रशिक्षणों के लिए अत्यन्त प्रासंगिक और उपयोगी हैं।

उनके व्यक्तित्व का एक और पहलू था – उनकी बेबाकी, और जिन मूल्यों पर वे यकीन रखती थीं उनके बचाव में वे पूरी तरह निडर थीं। इसकी एक बानगी देखने को मिली जब अयोध्या में ढाँचे की पुरातात्विक जाँच-पड़ताल की प्रकृति पर शीरीन ने अपने सोचे-समझे और शोध आधारित विचार कोर्ट के सामने रखे। ये विचार एक ऐसे व्यक्ति के थे जिसने समस्त सबूतों का बहुत सावधानी से अध्ययन किया था। शीरीन ने विविध तरह से हमारे संविधान के धर्मनिरपेक्ष ढाँचे का बचाव किया और पुरातत्व को साम्प्रदायिक मतभेदों से बचाने की कोशिश की।

• *अजय दांडेकर इस किताब के सहलेखक हैं।*

अजय दांडेकर: ग्रेटर नोएडा स्थित शिव नादर इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के इतिहास विभाग में अध्यापन करते हैं। आप शिरीन रत्नागर के छात्र रहे हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: माधव केलकर: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

यह लेख 06 जून, 2026 को *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली (ईपीडब्लू)* पत्रिका में प्रकाशित अजय दांडेकर के लेख का सम्पादित अंश है।